BERKELEY - REFUTATION OF MATERIALISM

बर्कले - जड़वाद का खण्डन ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Student)

जिस प्रकार स्पिनोजा ने अपने दर्शन का प्रारंभ देकार्ते के दर्शन के दोषों को दूर कर प्रारंभ किया, ठीक उसी प्रकार बर्कले ने भी अपने दर्शन का प्रारंभ लॉक के दर्शन से किया है। जैसा कि यह ज्ञात है कि लॉक की भांति बर्कले भी अनुभववादी विचारधारा के दार्शनिक हैं। अतः यह स्पष्ट है कि दोनों के विचारों में समानताएं अधिक होंगे परंतु लॉक अनुभववादी होते हुए भी कुछ ऐसे तथ्यों और सत्ताओं को स्वीकार कर लिया है जो कि एक अनुभववादी दार्शनिक के लिए उपयुक्त नहीं जान पड़ता। अतः बर्कले ने लॉक के दर्शन में जो कुछ खामियां थी उनको दूर करने का प्रयास किया है।जिसका परिणाम यह हुआ की लॉक का इंद्रियानुभववाद बर्कले के दर्शन में विज्ञानानुभववाद हो गया।

लॉक ने तीन तरह के द्रव्य की कल्पना की है -चित, अचित और ईश्वर। लॉक के अनुसार गुण द्रव्य की शक्ति है जो हमारी आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न करती है। इस तरह लॉक ने प्रत्ययों के कारण रूप में जड़ तत्व की सत्ता को स्वीकार किया है अर्थात जड़ द्रव्य की सत्ता स्वतंत्र है और जिनके द्वारा हमारे मन में उनके गुणों के प्रत्ययों की उत्पत्ति होती है। बर्कले के अनुसार हमारा ज्ञान केवल प्रत्ययों तक ही सीमित है। हम प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानते। हमें बाह्य वस्तु जिसे जड़ जगत कहते हैं का प्रत्यक्ष नहीं होता,अतः जड़ की सत्ता नहीं मानी जा सकती।जड़ द्रव्य को स्वीकार करने का अर्थ है नास्तिकता तथा भौतिकता को स्वीकार करना(The seeds of atheism, Scepticism and irreligion are contained in the View that matter, or world of bodies exist. We can avoid these implications only by getting rid of assertion that matter exist. F.Thilly -A History of Philosophy. P/349)

जड़वाद की यथार्तता मूलतः तीन तथ्यों पर निर्भर करती है।यदि इन तीन का खंडन हो जाये तो जड़वाद स्वतः ही खंडित हो जाती है।ये तीन तथ्य निम्न प्रकार से हैं : -

1अमूर्त प्रत्यय(Abstract Idea)

2 प्राथमिक एवं गौण गुणों का विभेद(Difference between Primary and Secondary qualities)

3 प्रत्ययों का स्पष्टीकरण (Clearness of Perception

अमूर्त प्रत्यय के खण्डन द्वारा आलोचना ।

लॉक जड़तत्व की अवधारणा सामान्य अमूर्त प्रत्यय पर आधारित है। बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खंडन करता है और यह प्रदर्शित करता है कि सामान्य अमूर्त प्रत्यय के अनुरूप वस्तु जगत में कुछ भी नहीं होता। जड़ द्रव्य को उसके सामान्य प्रत्यय से पृथक वस्तु जगत में स्थित मानना बिल्कुल अनुचित है। अगर मनस के बाहर कोई वस्तु स्थित है तो मनुष्य को उसका ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से होना चाहिए जबकि इंद्रियां सिर्फ मनुष्य को गुणों का ही ज्ञान देती हैं। बुद्धि के माध्यम से भी मन से बाहर स्थित किसी पिंड के अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं पाते।अतः जड़ पदार्थ की कल्पना के जड़के अमूर्त प्रत्यय पर आधारित होने के कारण उसका वस्तु जगत में कोई अस्तित्व नहीं है।

अमूर्त प्रत्यय मात्र एक नामवाद है। कोई भी प्रत्यय सामान्य इसलिए हो जाता है कि वह अपने समान विशेष प्रत्ययों का प्रतीक बन जाता है। जैसे- त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है यह एक सामान्य विचार है क्योंकि यह अपने समान सभी विशेष त्रिभुजों को अभिव्यक्त करती है। इसके के बारे में जो कुछ भी सिद्ध किया जाता है वह इसके समान सभी त्रिभुजों के बारे में सिद्ध हो जाता है। अतः सामान्य विचार मात्र एक नाम है जो किसी विशेष वस्तु पर नहीं बल्कि उससे संबोधित की जाने वाली सभी वस्तुओं पर लागू होता है। परंतु यहां एक प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि सारे प्रत्यय विशेष ही हैं तो फिर हम सामान्य मनुष्य या सामान्य रंग का प्रत्यय कैसे बनाते हैं। इस संबंध में बर्कले का कहना है कि मैं सामान्य प्रत्यय को नकारता नहीं बल्कि सामान्य अमूर्त की याथार्थता को अस्वीकार करता हूँ।(I do not deny absolutely there are general ideas, but only that there are any abstract general idea)

मूल एवं गौण गुणों में अंतर का खंडन द्वारा आलोचना ।

देकार्ते और लॉक दोनों ने ही गुणों को दो भागों में बांटा है -मूलगुण या प्राथमिक गुण(Primary qualities)और उप गुण(Secondary qualities)।मूलगुण या प्राथमिक गुण वह गुण है जो द्रव्य मेंअंतर्भूत रहते हैं अर्थात द्रव्याश्रित होते हैं और उपगुण या गौण गुण वे गुण हैं जो द्रष्टा और अनुभवकर्त्ता पर आश्रित होते हैं या फिर यह कहा जा सकता है कि मूल गुण द्रव्य का वास्तविक धर्म है जो उसमें विद्यमान रहता है और जिनका कार्य इंद्रियों से सम्पर्क होने पर हमारी आत्मा में, संवेदना के माध्यम से अपने प्रतिबिम्ब के रूप में विज्ञान उत्पन्न करना है।इनका दूसरा कार्य यह है कि अपनी शक्ति से हमारी आत्मा में संवेदना के रूप में उपगुण उत्पन्न करना। अतः यह स्पष्ट है कि मूल गुण ज्ञाता निरपेक्ष होता है तथा उपगुण ज्ञाता सापेक्ष। लॉक ने छह प्रकार के मूल गुण स्वीकार किए हैं आकार, गति, स्थिरता,विस्तार, संख्या और ठोसपन। इनके अतिरिक्त गौण गुण वे हैं जिनका बोध वस्तुओं और इंद्रियों के संपर्क से होता है जैसे - रूप, रस ,गंध, स्पर्श इत्यादि। पर बर्कले का ऐसा मानना है कि गुण में किया गया यह विभेद उचित नहींहै।उनका कहना है कि जिस प्रकार उपगुण मनाश्रित है उसी प्रकार मूल गुण भी मनाश्रित है, दोनों का अधिष्ठान मन ही है।दोंनो

संवेदन मात्र हैं तथा दोनों ही इंद्रियों द्वारा ग्राह्य हैं।

बर्कले के अनुसार ऐसा कोई भी गुण नहीं जिसे ज्ञाता सापेक्ष ना कहा जाए सभी गुण मनाश्रित है चाहे वह मूल गुण हो या उपगुण दोनों एक दूसरे से अलग नहीं किए जा सकते। इनका विभेद कल्पना प्रसूत तथा अनुचित है।क्या हमने कभी सेव को उसके मिठास, आकार, ठोसपन आदि से अलग करके जाना है, नहीं न। बर्कले के अनुसार मूल गुण तथा उपगुण दोनों एक ही गुण है जो आत्मा में रहते हैं मनाश्रित है। अतः सारे गुणों को गौण गुण ही कहा जाना चाहिए। इस तरह बर्कले ने भौतिकवाद का खंडन कर यह निष्कर्ष निकाला कि प्रत्यय ही सत्य है तथा जड़ पदार्थ असत्य।